Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी व्याकरण शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : सरस हिन्दी व्याकरण नौं,दस

उपविषय - 'वाच्य परिवर्तन' (पृष्ठ संख्या -283)

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक 'सरस हिन्दी व्याकरण भाग नौं एवं दस' की पृष्ठ संख्या- 283 पर दिए 'वाच्य परिवर्तन' पर चर्चा करेंगे।

बच्चो! 'वाच्य' का शाब्दिक अर्थ है - बोलने का विषय। कुछ उदाहरणों के द्वारा हम वाच्य को समझने का प्रयास करेंगे। जैसे :-

1. मोहन पत्र पढ़ता है।
2. मोहिनी से चित्र बनाया जाता है।
3. अँधेरे में पढ़ा नहीं जाता।

उपर्युक्त पहली उदाहरण में 'मोहन' कर्ता है और पढ़ता है क्रिया। इस वाक्य में क्रिया का संबंध कर्ता से है। दूसरी उदाहरण में क्रिया का संबंध कर्म (चित्र) से है तथा तीसरी उदाहरण में क्रिया का संबंध न कर्ता से है, न कर्म से है बल्कि भाव से है।

अतः यह कहा जा सकता है कि क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य के तीन भेद हैं :-

(क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य

आइए! अब वाच्य के भेदों को विस्तार से जानेंगे।

1. कर्तृवाच्य - जिस वाक्य में क्रिया का संबंध कर्ता से होता है, वह वाक्य कर्तृवाच्य होता है। इसमें क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार होता है। जैसे :-

(क) बच्चे पुस्तक पढ़ते हैं।
(ख) शिक्षिका छात्रों को पढ़ा रही हैं।
(ग) कविता खाना खाएगी।

बच्चो ! एक बार फिर पहली उदाहरण से कर्तृवाच्य को समझने का प्रयास करें।

बच्चे पुस्तक पढ़ते हैं।
(कर्ता) (क्रिया)
(एकवचन, स्त्रीलिंग) (एकवचन, स्त्रीलिंग)

इस वाक्य में क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के अनुसार है। अत: यह कर्तृवाच्य है।

इसी प्रकार उपर्युक्त तीनों उदाहरण में भी कर्ता की प्रधानता है। इन वाक्यों में कर्ता ही वाक्य का केन्द्र बिन्दु है। अत: उपर्युक्त तीनों उदाहरण कर्तृवाच्य के हैं।

बच्चो ! कर्तृवाच्य में अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाओं का प्रयोग हो सकता है परन्तु इसमें कर्ता मुख्य होता है और कर्म गौण होता है जैसे :-

(क) सुरेश दौड़ा। (अकर्मक क्रिया)
(ख) मैं खाना खाऊँगा। (सकर्मक क्रिया)

बच्चो ! हिन्दी भाषा में कर्तृवाच्य का प्रयोग अधिक होता है।

2. कर्मवाच्य - जिस वाक्य में क्रिया का संबंध कर्ता से न होकर कर्म से होता है। वहाँ कर्मवाच्य होता है। कर्मवाच्य में प्रयुक्त लिंग और वचन कर्म के अनुसार होता है जैसे :-

(क) मोहन से आम खाया जाता है।
(ख) लड़के से लीची खाई गई।

(ग) दवाई दे दी गई।

बच्चो! एक बार फिर पहली उदाहरण पर आते हैं :-

मोहन से आम खाया जाता है।
(कर्म) (क्रिया)
(एकवचन, पुल्लिंग) (एकवचन, पुल्लिंग)

उपर्युक्त उदाहरण में क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार हुआ है। अतः ये कर्मवाच्य है।

कर्मवाच्य में इस बात का ध्यान रहे कि कर्मवाच्य में केवल सकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है। इसमें अकर्मक क्रिया का प्रयोग नहीं होता।

कर्मवाच्य का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में होता है :-

(क) जब कर्ता को प्रकट करने की आवश्यकता न हो या वह अज्ञात हो। जैसे :-
पत्र भेज दिया गया है।

(ख) अधिकारियों के आदेशों में जैसे :-
अपराधी को दण्ड दिया जाएगा।
रिपोर्ट कल तक मिल जानी चाहिए।
आपको सूचित किया जाता है।

3. भाववाच्य - जिस वाक्य में क्रिया का संबंध न कर्ता से होता है और न कर्म से बल्कि भाव से होता है, वहाँ भाववाच्य होता है। जैसे :-

(क) बीमार से चला नहीं जाता
(ख) मुझसे इतनी गरमी में सोया नहीं जाएगा।
(ग) उनसे हँसा नहीं जाता।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में भाव की प्रधानता है और अकर्मक क्रिया का प्रयोग किया गया है। अतः ये सभी उदाहरण भाववाच्य की हैं। भाववाच्य में केवल अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग होता है। इस वाच्य में प्रायः नकारात्मक वाक्य होते हैं।

भाववाच्य का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में होता है।

असमर्थता या आवश्यकता दिखाने के लिए, जैसे :-
रोगी से चला नहीं जाता।

आज्ञा प्राप्त करने के लिए, जैसे :-
आओ, बाहर घूमा जाए।

बच्चो! अब वाच्य को परिवर्तन करने के भी कुछ नियम हैं। वे इस प्रकार हैं :-

वाच्य परिवर्तन के नियम :-

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के नियम

(क) कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित किया जाता है।

(ख) कर्तृवाच्य के मुख्य कर्ता के साथ 'से', 'के द्वारा', 'द्वारा' विभक्ति जोड़कर उसे करण कारक बना दिया जाता है। जैसे :- रमा - रमा से, राजू ने - राजू के द्वारा, मैंने - मुझसे अथवा मेरे द्वारा।

(ग) 'जा' धातु के क्रिया रूप कर्मवाच्य की मुख्य क्रिया के लिंग, वचन आदि के अनुसार जोड़कर साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया बना दिया जाता है। जैसे :- खाता है - खाया जाता है, घूमता है - घूमा जाता है, को मारा - को मारा गया, लिख रहे थे - लिखे जा रहे थे।

(घ) कर्मवाच्य की क्रिया के लिंग, वचन आदि वाक्य के कर्म के अनुसार प्रयोग किए जाते हैं।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :-

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
मोहन पत्र लिखता है।	मोहन के द्वारा पत्र लिखा जाता है।
सुरेश मिठाई लाएगा।	सुरेश से मिठाई लाई जाएगी।
राम ने रावण को मारा।	राम के द्वारा रावण को मारा गया।

2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाने के नियम

(भाववाच्य केवल अकर्मक क्रियाओं से ही बनते हैं अर्थात् उनमें कर्म नहीं होता।)

(क) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के नियम (ख) एवं (ग) इसमें भी पूरी तरह लागू होते हैं।

(ख) वाक्य की क्रिया को (भाव को) ही वाक्य का कर्ता बना दिया जाता है जैसे :- हँसता है - हँसा जाता है। खेला - खेला गया। सोया - सोया जाएगा। सो रही है - सोया जा रहा है।

(ग) भाववाच्य में क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :-

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
हम रोज़ नहाते हैं।	हमसे रोज़ नहाया जाता है।
मैं नहीं खाता।	मुझसे खाया नहीं जाता।
वे जाते हैं।	उनसे जाया जाता है।

बच्चो! आज हमने वाच्य, वाच्य के भेद तथा वाच्य परिवर्तन के नियम को जान लिया है। इन्हें सभी छात्र एक बार पुनः पढ़ेंगे व समझेंगे।

गृहकार्य

सभी छात्र अपनी पाठ्य पुस्तक सरस हिन्दी व्याकरण की पृष्ठ संख्या 287 पर दिए अभ्यास के प्रश्न-1 को हल करके अपनी-अपनी व्याकरण की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]